# हिन्दी भाषा का विकास

डॉ0 वन्दना श्रीवास्तव
असि0प्रो0, हिन्दी विभाग
श्री जे0एन0पी0जी0 कॉलेज
लखनऊ

## शोध सार

भारत में बोली जाने वाली विभिन्न भाषायें भिन्न भिन्न भाषा परिवार से सम्बन्ध रखती हैं। भारोपीय भाषा परिवार का सबसे प्रमुख भाषा समूह है–'आर्य भाषाएँ'। साहित्य, कला, धर्म व संस्कृति की दृष्टि से भारतीय आर्य भाषाएँ विश्व की समस्त भाषाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। हिन्दी, भारतीय आर्य भाषा परिवार की प्रमुख भाषा है। भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार 'हिन्दी' कोई एक भाषा न होकर एक भाषिक परिवार या संघ है जिसमें उसकी उपभाषायें समान स्तर पर अवस्थित हैं। प्रस्तुत पत्र में हिन्दी के उद्भव एवं विकास पर विद्वानो एवं भाषाविदों के मतों के आधार पर विचार करते हुए निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द– 1. भाषा परिवार 2. भारोपीय भाषा 3. द्रविण भाषा 4. भारत ईरानी आर्य भाषा 5. आर्य भाषा

## शोध पत्र

भारत में बोली जाने वाली विभिन्न भाषायें भिन्न भिन्न भाषा परिवार से सम्बन्ध रखती हैं। भारत में चार भाषा परिवार की भाषायें बोली जाती हैं–

1. भारोपीय भाषा परिवार
2. द्रविण भाषा परिवार
3. आस्ट्रिक भाषा परिवार
4. चीनी तिब्बती भाषा परिवार

भारोपीय भाषा परिवार का सबसे प्रमुख भाषा समूह है–'आर्य भाषाएँ'।

आर्य भाषा के दो वर्ग हैं –

1. भारत ईरानी आर्य भाषाएँ 2. यूरोपीय आर्य भाषाएँ।

भारत ईरानी आर्य भाषा वर्ग की तीन शाखायें हैं –

1. भारतीय आर्य भाषाएँ
2. ईरानी (ईरान एवं अफगानिस्तान की भाषाएँ)
3. दरद (कश्मीर एवं पामेर के पूर्व दक्षिण की भाषाएँ)

साहित्य, कला, धर्म व संस्कृति की दृष्टि से भारतीय आर्य भाषाएँ विश्व की समस्त भाषाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। वैज्ञानिकता की दृष्टि से ये विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषाओं में गिनी जाती हैं। विश्व की प्रचीनतम भाषा संस्कृत इसी भारतीय आर्य भाषा समूह की भाषा है। भारतीय आर्य भाषा के विकास को निम्नलिखित कालखण्डों में विभाजित किया जाता है –

क). प्राचीन काल – 2000ई0पू0 – 500 ई0पू0

1. वैदिक संस्कृत – 2000 ई0पूर्व – 1000 ई0पू0
2. लौकिक संस्कृत – 1000 ई0पू0 – 500 ई0पू0

ख). मध्य काल – 500ई0पू0– 1000 ई0

1. पालि – 500 ई0 पू0 – 01 ई0
2. प्राकृत – 01 ई0 – 500 ई0
3. अपभ्रंश – 500 ई0 – 1000 ई0

ग). आधुनिक काल – 1000 ई0 – आज तक

1. हिन्दी
2. हिन्दीतर भाषाएँ – बंगला, उड़िया, असमिया, मराठी, गुजराती, पंजाबी, सिन्धी

उपरोक्त कालविभाजन से स्पष्ट है कि हिन्दी का विकास अपभ्रंश से हुआ है। हिन्दी, भारतीय आर्य भाषा परिवार की प्रमुख भाषा है। यह भी ध्यान रखने योगय है कि भाषा, सतत् प्रवाहित नीर के समान है जिसे उसके प्रवाह से अलग नहीं किया जा सकता। भाषा लगातार प्रयोग की जा रही होती है। अतः कब एक भाषा से दूसरी भाषा में हम प्रवेश कर जाते हैं उसके लिए कोई एक लकीर खींचना सरल नहीं होता। बहुत समय तक दोनों भाषायें साथ साथ चलती हैं। धीरे धीरे पूर्ववर्ती भाषा की विशेषतायें कमजोर होती जाती हैं तथा नयी प्रवृत्तियाँ एवं विशेषतायें प्रबल होती जाती हैं और इस प्रकार धीरे धीरे भाषा नया रूप ग्रहण कर लेती है। यही कारण है कि किसी भाषा का आरंभ कब से माना जाये इस पर विभिन्न भाषा वैज्ञानिकों एवं इतिहासकारों में मतभेद रहता है। हिन्दी भाषा के इतिहास को यदि देखें तो हम पाते हैं कि अपभ्रंश से हिन्दी का विकास हुआ है, इस पर तो सभी भाषा वैज्ञानिक एवं इतिहासकार एकमत हैं किन्तु हिन्दी का आरंभ कब से माना जाये, इस पर सहमति नहीं है। मिश्र बंधु, राहुल सांकृत्यायन, डॉ0राम कुमार वर्मा आदि हिन्दी भाषा का आरंभ लगभग 8वीं शताब्दी से मानते हैं तो वहीं आचार्य राम चन्द्र शुक्ल, बाबू श्याम सुन्दर दास, गणपति चन्द्र गुप्त आदि हिन्दी भाषा का आरंभ लगभग 11वीं शताब्दी से मानते हैं। अध्ययन की सुविधा के लिए सामान्यतः हम 1000 ई0 सन् से हिन्दी का आरंभ मान लेते हैं।

यह एक रोचक किंतु वास्तविक तथ्य है कि 'हिन्दी' पद का प्रयोग किसी एक निश्चित अर्थ में नहीं होता। हिन्द क्षेत्र में रहने वाले सभी लोगों, सभी भाषाओं के लिये 'हिन्दी' पद का प्रयोग किया जाता था। ऐतिहासिक दृष्टि से उत्तर एवं मध्य भारत की भाषा के अर्थ में 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग तेरहवीं शताब्दी के पहले नहीं मिलता। संस्कृत, प्राकृत या अपभ्रंश साहित्य में कहीं भी 'हिन्दी' पद का प्रयोग नहीं दिखाई देता। 13वीं शतीब्दी के प्रसिद्ध फ़ारसी कवि औफ़ी ने सर्वप्रथम हिंद की देशी भाषा के लिए 'हिन्दवी' शब्द का प्रयोग किया। 13वीं–14वीं शती में प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो ने उत्तर भारत की देशी भाषा को 'हिन्दी' या 'हिन्दवी' की संज्ञा प्रदान की। दक्खिनी हिन्दी के प्रसिद्ध कवि शाह मीराँजी ने अपनी काव्य भाषा को हिन्दी कहा। इसके बाद इस काव्यधारा के अनेक कवियों – मुल्ला वजही, शाह बुरहानुद्दीन, वली उल्ला, कादरी, याकूब आदि ने अपनी भाषा को हिन्दी कहा।

अब्दुर्रकादिर बदायूँनी ने मुल्ला दाउद की 14वीं सदी की रचना 'चंदायन' जो अवधी में है उसे 'हिन्दवी' कहा। जायसी ने अपने महाकाव्य 'पद्मावत'– 1527–1540, में अपनी भाषा को 'हिन्दवी' कहा है–'' तुर्की अरबी हिन्दवी, भाषा जेती आहि। जामें मारग प्रेम का, सबै सराहै ताही।।'' कबीर, तुलसी आदि अपनी भाषा को हिन्दी या अवधी न कहकर 'भाषा' या 'भाखा' का नाम देते हैं। कबीर कहते हैं– '' संसकीरत है कूप जल, भाखा बहता नीर। तुलसी कहते हैं–'' का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिये साँच।'' प्रथम ब्रजभाषा व्याकरण के लेखक मिर्ज़ा खाँ 1676 ने अपने 'तहफ्तुल हिन्द' में ब्रजभाषा को 'हिन्दी' कहा। स्पष्ट है कि मध्यकाल में हिन्दी, हिन्दवी, भाषा, भाखा शब्द पर्यायवाची थे और अवधी, ब्रज, भोजपुरी, खड़ी बोली, राजस्थानी, बुन्देली आदि सभी बोलियों के लिए समान रूप से प्रयोग किये जाते थे। इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं कि तत्कालीन मध्य भारत की सभी बोलियों के लिए जहाँ मुसलमान लेखक प्रायः हिन्दी, हिन्दवी पद का प्रयोग करते थे वहीं हिदू कवि भाषा या भाखा तथा यूरोपीय यात्री व पादरी हिन्दुस्तानी संज्ञा का प्रयोग करते थे।

सर्वप्रथम जॉन गिलक्राइस्ट ने राजनीतिक उद्देश्य से 'हिन्दुस्तानी' शब्द को नया अर्थ देने का प्रयास किया जहाँ 'हिन्दुस्तानी' से उनका तात्पर्य उर्दू से था जो फोर्ट विलियम कॉलेज के हिन्दुस्तानी विभाग में पढ़ाई जाती थी। शीघ्र ही इस भूल का पता चल गया। सन् 1812 में संभवतः पहली बार कैप्टन टेलर ने कॉलेज का वार्षिक विवरण प्रस्तुत करते हुए 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग आधुनिक अर्थ में किया। 1824 ई0 में विलियम प्राइस ने सर्वप्रथम स्वयं को हिन्दी प्रोफेसर लिखा और ब्रजभाषा, खड़ी बोली, हिन्दवी, हिन्दुई, ठेठ हिन्दी आदि नामों के स्थान पर 'हिन्दी' को चुना। राजा लक्ष्मण सिंह ने अपनी अनूदित रचनाओं में हिन्दी का जो नमूना प्रस्तुत किया वह सर्वमान्य हो गया और 'हिन्दी' पद उस भाषा के लिए पूर्णतः स्वीकृत हो गया जो मूलतः खड़ी बोली पर आधारित है, जिसमें तद्भव शब्दों के साथ संस्कृत तत्सम शब्दों का अधिक मात्रा में प्रयोग होते हुए भी बोलचाल में घुलमिल गये विदेशी शब्दों का बहिष्कार नहीं किया गया। परवर्ती विद्वानों ने इसी हिन्दी का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास किया।

19वीं सदी में खड़ी बोली पर आधारित हिन्दी को ग्रहण अवश्य किया गया किन्तु साथ ही साथ 'हिन्दी' पद का प्रयोग उसके व्यापक पारिवारिक अर्थ में भी होता रहा और आज भी होता है। आचार्य राम चन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत ब्रजभाषा, अवधी, खड़ी बोली, के साथ राजस्थानी और मैथिली की रचनाओं को भी सम्मिलित किया। वहीं जॉर्ज ग्रियर्सन एवं उनके परवर्ती भाषा वैज्ञानिकों ने राजस्थानी, बिहारी एवं पहाड़ी वर्ग की उपभाषाओं को हिन्दी से भिन्न मानते हुए पश्चिमी हिन्दी एवं पूर्वी हिन्दी को ही हिन्दी की उपभाषाओं के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत ब्रज भाषा, खड़ी बोली, कन्नौजी, बाँगरू, बंदेली तथा पूर्वी हिन्दी के अन्तर्गत अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी को स्थान दिया। परन्तु यह भी सत्य है कि राजस्थानी, बिहारी एवं पहाड़ी वर्ग की भाषाएँ हिन्दी परिवार से सर्वथा पृथक् नहीं मानी जा सकतीं। अतः इन्हें भी हिन्दी परिवार में ही स्थान देने का आग्रह किया जाता है। डॉ0 रामविलास शर्मा ने हिन्दी को राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार व मध्य प्रदेश की जातीय भाषा एवं यहाँ की भाषाओं व बोलियों को हिन्दी की उपभाषायें माना है। भारतीय संविधान में भी इन क्षेत्रों के निवासियों की मातृभाषा हिन्दी मानी गयी है। राजभाषा अधिनियम 1976 (यथा संशोधित 1987) में भाषा की दृष्टि से समस्त भारत को चार क्षेत्रों में बाँटते हुए 'क' क्षेत्र के अंतर्गत बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली तथा अण्डमान निकोबार द्वीप समूह को रखा गया और यह माना गया है कि यहाँ की भाषा हिन्दी है। वर्तमान समय में नये राज्यों के अस्तित्व में आने के बाद उत्तराखण्ड, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ भी उन राज्यों में सम्मिलित हो गये हैं जहाँ की मातृभाषा हिन्दी है। स्पष्ट है कि भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार 'हिन्दी' कोई एक भाषा न होकर एक भाषिक परिवार या संघ है जिसमें उसकी उपभाषायें समान स्तर पर अवस्थित हैं।

भाषा के रूप में हिन्दी का प्रसार पश्चिम में राजस्थान की पाकिस्तान से लगी सीमा तक उत्तर पश्चिम में हरियाणा और हिमाचल प्रदेश तक, उत्तर में उत्तर प्रदेश और बिहार की उत्तरी सीमा तक, उत्तर पूर्व और पूर्व में बिहार की पूर्वी सीमा तक, दक्षिण पूर्व में मध्य प्रदेश की पूर्वी सीमा तक तथा दक्षिण में मध्य प्रदेश और राजस्थान की दक्षिण सीमाओं तक है।

भारत से बाहर के देशों में भी हिन्दी एक लोकप्रिय भाषा है, जिसका प्रचार, प्रसार एवं प्रयोग विश्व के अनेक देशों में होता है। मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम जैसे देशों की मुख्य भाषाओं में तो हिन्दी का स्थान है ही अमेरिका, कनाडा, इंग्लैण्ड आदि देशों में भी बड़ी संख्या में हिन्दी भाषी हैं।

आधार ग्रन्थ–


1. हिन्दी भाषा – डॉ0 हरदेव बाहरी
2. हिन्दी भाषा का विकास – गोपाल राय
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य राम चन्द्र शुक्ल
4. हिन्दी जाति का इतिहास – आचार्य राम विलास शर्मा
5. हिन्दी भाषा का इतिहास –डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा